श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : तृतीयवर्ष 3

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Answersheet 2021

ऐनरोलमेन्ट नंबर 3 शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	अंतमुहूर्त
(२)	बावीस अभक्ष्य
(३)	कार्तिक वद १ से फागुन सुदि पुनम
(४)	छः
(५)	स्थापना
(६)	अनंतकाय
(७)	कल्याण
(८)	हुंडक
(९)	दायक
(१०)	तेजोलेश्या
(११)	कषाय
(१२)	संरक्षणानंद
(१३)	देशोन पूर्व करोड
(१४)	श्रावक के
(१५)	चार
(१६)	एकाग्रता
(१७)	पच्चीसवे तीर्थंकर
(१८)	प्राणातिपात विरमण
(१९)	ध्वज के
(२०)	आजीविका दोष

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	बारह वर्ष
(२)	श्री मानतुंग आचार्य
(३)	विकलेन्द्रिय
(४)	कापोत
(५)	स्थावर्त
(६)	महाप्रभावशाली
(७)	प्रत्याख्यानावरणीय
(८)	मानपिंड दोष
(९)	उपशम सम्यकत्व
(१०)	द्रव्य लेश्या
(११)	वैक्रिय लब्धी
(१२)	पिहित दोष
(१३)	प्रमत्त संयत
(१४)	संस्थानविचयधर्मध्यान
(१५)	निशिथ सूत्र
(१६)	गुणस्थान
(१७)	विकुर्वित क्रियाकाल
(१८)	खराब शकुन
(१९)	वैमानिक
(२०)	देव
(५)	बुलबुले
(६)	समझना
(७)	देशविरती
(८)	स्त्रियों ने
(९)	होते हैं
(१०)	चौथे
(११)	धर्मध्यान
(१२)	ध्यान से
(१३)	समचतुरस्र
(१४)	दुष्ग्रह
(१५)	समुद्घात

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	दोष
(२)	आकारना
(३)	प्रगट
(४)	मन में

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	१०	(६)	४
(२)	७	(७)	2
(३)	८	(८)	५
(४)	६	(९)	3
(५)	१	(१०)	६

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१६
(२)	८८
(३)	23
(४)	१५ दिन
(५)	42
(६)	लक्ष, 100,000
(७)	१४८
(८)	3
(९)	चौथा ४
(१०)	छः ६

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	१८
(२)	×	(२)	१४
(३)	×	(३)	८
(४)	×	(४)	3
(५)	✓	(५)	४
(६)	✓	(६)	99
(७)	×	(७)	20
(८)	✓	(८)	92
(९)	✓	(९)	६
(१०)	✗	(१०)	92

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________ जांचनेवाले की सही ______________

प्रश्न - ८

१. प.पू. आचार्य श्री मानतुंगसूरि के इष्टदेव श्री पार्श्वनाथ भगवान है। उनका स्तवन सब महाभयों को हरनेवाला है। ये स्तवन भव्य जीव को आनंद देनेवाला तथा कल्याण की परंपरा का कारण है। ऐसे श्री पार्श्वनाथ भगवान राजभय, यक्ष, राक्षस, कुस्वप्न, खराब शकुन, दुष्ट ग्रह इन सभी की पीडा में, मार्ग में उपसर्ग में, रात्रि में, सुबह, शाम में जो मनुष्य इस स्तवन को पढ़ते है और सुनते है उन दोनों के तथा इस स्तवन के रचयिता प.पू.आ.श्री मानतुंगसूरि के पाप का शमन करते है।

२. लेश्या याने जीव का आत्मपरिणाम। किसी के आत्मपरिणाम शुद्ध होते है। किसी के अशुभ होते है। एक ही जीव के आत्मपरिणाम भी कभी शुभ तो कभी अशुभ होते है। सब जीवों के आत्मपरिणाम सतत बदलते रहते है। आत्मपरिणाम यह भावलेश्या है। ये भावलेश्या उत्पन्न होने के जो कारणभूत पुद्गल है वे द्रव्यलेश्या है। द्रव्यलेश्या के पुद्गल विविध वर्ण के होते है। उनके अनुसार उनके नाम और तीव्रता होती है। कृष्णलेश्या - कालावर्ण, अति क्रूर परिणाम वाली। नीललेश्या - नीलवर्ण कम क्रूर परिणामवाली। कापोत लेश्या - भूरा वर्ण अल्प क्रूर परिणामवाली। तेजो लेश्या - लालवर्ण, अल्प शांत परिणामवाली। पद्म लेश्या - पीतवर्ण ज्यादा शांत परिणाम वाली। शुक्ल लेश्या - सफेदवर्ण, अतिशांत परिणाम वाली। प्रथम तीन अशुभ तथा अंतिम तीन शुभ लेश्या है।

३. श्रावक के निमित्त साधु को लगते सोलह दोष है। १) आधाकर्मी दोष - साधु के निमित्त से छः काय जीवों की हिंसा करके जो आहार बनाने में आये वो। २) औद्देशिक दोष - हररोज की रसोई में साधु - साध्वी के लिये ज्यादा की रसोई बनाना। ३) पूर्तिकर्म दोष - शुद्ध आहार में एकाध भी कण या अल्प मात्रा में आधाकर्मी आहार मिलाये तो आहार अशुद्ध बनता है। उसी तरह साधु सावधान न हो तो साधु को भी सोलह दोष लगते है। ४) धात्रिक दोष - आहार प्राप्त करने हेतु गृहस्थ के बच्चों के साथ खेले वो। ५) दूतिक दोष - दूत की तरह गांव, परगांव में संदेशा देकर आहार ले वो "दूतिकदोष" कहलाता है। ६) निमित्त दोष - ज्योतिष निमित्त आदि कहकर आहार ले वो "निमित्त दोष" कहलाता है।

४. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद जीव व्रत, नियम लेकर आराधना कर जीवन को शक्य उतने पापों से दूर रखने का प्रयत्न करता है तब श्रावक पाँचवे देशविरति गुणस्थान प्राप्त करता है। जघन्य देशविरतिवाला जीव सात व्यसनों का त्यागी होता है। प्राणातिपात विरमणव्रत को धारण करनेवाला, नमस्कार महामंत्र का आराधक होता है। मध्यम देशविरतिधर श्रावक के बार व्रतों का पालन करनेवाला, और श्रावक के छह कर्तव्य की आराधना करनेवाला होता है। उत्कृष्ट देशविरतिधर सचित्त आहार का त्यागी, नित्य एकासन करनेवाला, संपूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत का आराधक होता है। सर्वविरति की इच्छा हमेशा रखता है। सब आरंभ-समारंभयुक्त कार्यों का त्यागी होता है। इस गुणस्थानक की स्थिति देशोन पूर्व करोड वर्ष की होती है।

५. वज्रस्वामी को पूर्वभव के मित्र जृंभकदेव ने प्रसन्न होकर वैक्रिय लब्धि दी और फिर एक बार प्रसन्न होकर आकाशगामिनी विद्या दी। एक बार भयंकर दुष्काल पडने से श्रीसंघ को पट्टवस्त्र पर बैठाकर सुकालवाले प्रदेश में गये। वहां बौद्धराजा ने जैन मंदिरो में फूलों को लाने की सख्त मनाई की। पर्युषण के वक्त श्रावकों ने वज्रस्वामी को इस बाबत में निवेदन किया जिससे आकाशगामिनी विद्या से माहेश्वरीपुरी में अपने मित्र माली को और हिमवंत पर्वत पर जाकर श्रीदेवी को बात बताकर बौद्धराजा के राज्य में जिनमंदिरो के लिये पुष्पपूजा की व्यवस्था करायी। वहां दैविक महोत्सव से